पुरुषोतम मास - 17 मई 2026 से 15 जून 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में

छः सिद्धिदायक यंत्र

ऋण बाधा समाप्ति हेतु
ऋण मोचन यंत्र

गृहस्थ सुख में अभिवृद्धि हेतु
अनंग यंत्र

व्यवसाय बढ़ोतरी हेतु
व्यवसाय लाभ यंत्र

उन्नति हेतु
लक्ष्मी विनायक यंत्र

शत्रुओं पर विजय हेतु
शत्रु विद्वेषण यंत्र

दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन हेतु
महामृत्युंजय यंत्र

कर्मशील व्यक्ति साधना के द्वारा जीवन में निरन्तर उन्नति प्राप्त कर सकता है, और इसके लिए प्रस्तुत है मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त यंत्र जो आपके जीवन में इन्द्रधनुषी रंग भर सकते हैं।

मोती चुनने के लिए सागर में गहरे उतरना पड़ता है, उसी प्रकार ज्ञान के श्रेष्ठ मोती प्राप्त करने हेतु मंत्र, यंत्र तथा तंत्र के विशाल सागर में यदि गुरु कृपा हो जाय, तो श्रेष्ठ स्वरूप प्राप्त कर सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान शिव के अमृत वचनों पर आधारित तथा महर्षि शुक्राचार्य द्वारा संहिताबद्ध, षडंग मंत्र विद्या पर आधारित महाग्रन्थ **'यंत्र चूड़ा मणि'** श्रेष्ठतम ग्रन्थ कहा जा सकता है।

ये शब्द, ये प्रयोग केवल शब्द मात्र नहीं हैं, ये यंत्र तो हर घर में होने चाहिए। हर साधक को ये साधनाएं सम्पन्न करनी आवश्यक हैं। ये सिद्ध प्रयोग हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

कथा आती है, कि एक बार भगवान शिव, पार्वती के साथ विराजमान थे, पार्वती ने शिव से निवेदन किया, कि पृथ्वी पर इतने अधिक कष्ट क्यों हैं? मनुष्यों के चेहरों पर हर समय चिन्ता की रेखाएं क्यों बनी रहती हैं? वे लोग जो भी कार्य करना चाहते हैं वे सिद्ध नहीं होते, उनकी इच्छाएं हर समय अपूर्ण क्यों रहती हैं?

रुद्र देव ने कहा, कि पृथ्वी पर मनुष्य कार्य तो करता है, कर्मशील भी है, परन्तु उसमें कर्म को सही तरीके से करने का ज्ञान नहीं है, इसके लिए वह बारम्बार भटक जाता है। शास्त्रों के अनुसार चलता नहीं, उसमें आचार विचार की नियमितता नहीं है, हर समय अविश्वास, संदेह से घिरा रहता है, गुरु पर, साधना पर, मंत्रों पर, अविश्वास करते हुए कार्य करता है, इसलिए उसे जीवन में सिद्धि नहीं मिल पाती। पार्वती ने कहा, कि हे देव! क्या ऐसा कुछ उपाय हो सकता है, जिसे मनुष्य सरल रुप में कर सके, अपनी दिन-प्रतिदिन की चिन्ताओं को मिटा कर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर परमतत्व को प्राप्त हो सके, मनुष्य की चिन्ताएं उसे एक चक्र में उलझाए हुए है, इसका कुछ उपाय अवश्य बतायें।

इस पर सिद्धियों के प्रदाता शिव ने जो 108 प्रयोग विशेष रुप से दिये, वे साधना के, सिद्धि के आधार है। सरलतम विधि के साथ, सरल मंत्र जप के ये प्रयोग साधक स्वयं सम्पन्न कर सकेंगे। इस में सर्वप्रथम छः यंत्रों का विवेचन एवं विधान स्पष्ट किया जा रहा है।

यंत्र साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी अनुपालना साधक को अवश्य ही करनी चाहिए। बिना जानकारी, बिना नियम, कार्य करने से सिद्धि प्राप्त नही हो सकती।

☆ प्रत्येक प्रयोग को तीन दिन तक विधि विधान से सम्पन्न करें, पूजन कार्य करें।

☆ साधना काल में ब्रह्मचर्य धर्म का पूर्ण रूप से पालन करें, ध्यान में भी शुद्धता हो।

☆ शुद्ध उद्देश्य और शान्त अन्तःकरण से ही प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय को कल्प कहा जाता है, पूरे कल्प में पूर्ण विश्वास के साथ कार्य करना चाहिए, अन्यथा संदेह पूर्वक किया गया कार्य विपरीत फल देता है।

☆ साधना हेतु सर्वप्रथम स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पूजन सम्पन्न करें और कुल-देवता, इष्ट देवता का भी पूजन सम्पन्न करें।

☆ यंत्र साधना का कार्य एकान्त में सम्पन्न करना चाहिए, साधना समय में विध्न नहीं पड़ना चाहिए।

☆ सात्विक भोजन ग्रहण करना चाहिए, और केवल दूध, फलाहार से तृप्ति नहीं हो, तो केवल सायंकाल को ही भोजन करें।

☆ साधना काल में भूमि पर ही शयन करें, रात्रि में जो भी स्वप्न आये, प्रातःकाल उठकर उनका विवेचन अवश्य करें, अशुभ स्वप्न आने पर उसी समय उठ कर गुरुमंत्र का जप सम्पन्न करना चाहिए।

इन नियमों को ध्यान में रखते हुए नीचे दिये गये विशेष प्रयोगों को साधक सम्पन्न कर सकते हैं। एक समय में एक ही प्रयोग सम्पन्न करें, सुबह कोई प्रयोग, दोपहर को कोई प्रयोग और शाम को कोई और प्रयोग उचित नहीं है, एक-एक करके साधना सम्पन्न की जाय।

1. ऋणमोचन यंत्र

ऋण बाधा बहुत अधिक बढ़ जाय तो किसी भी बुधवार को प्रातः जल्दी उठ कर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त धारण योग्य ताबीज रुपी यंत्र को अपने सामने एक पात्र में स्थापित करें, फिर निम्न यंत्र को अष्टगन्ध से पीले कागज पर अंकित करें। अंकित यंत्र के चारों ओर **'श्रीं'** बीज मंत्र लिखें, मध्य में जहां ॐ लिखा है उसके नीचे अपना नाम लिखें। सामने सात सुपारी रखें और प्रत्येक सुपारी के नीचे एक सिक्का स्थापित करें तथा कुंकुम चढाएं, अब इष्ट देवता, कुल देवता तथा गुरु पूजन कर मंत्र जप प्रारम्भ करें।

ऋणमोचन यन्त्र

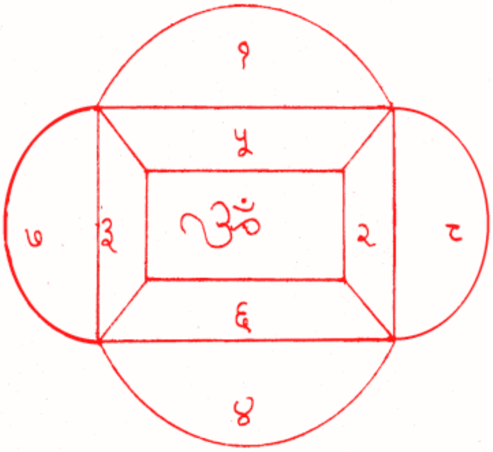

मंत्र

॥श्रीं॥

इस मंत्र की ग्यारह माला मंत्र जप करें, तीन दिन के पश्चात् मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'धातु के ताबीज'** को काले धागे में बांध कर अपनी दाहिनी भुजा में एक माह धारण कर लें तथा एक माह के पश्चात् यंत्र ताबीज सहित शेष सामग्री को किसी शिव मन्दिर में चढा दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

प्रतिकूल परिस्थितियों में घबराहट उत्पन्न होती है और घबराहट में उसे अजीबो गरीब ख्याल आते हैं, उम्मीदें कमजोर पड़ती जाती है, धैर्य जवाब देने लगता है और ऐसी स्थिति में जो भी निर्णय लेता है, उसमें से अधिकांश गलत साबित होते हैं।

अतः सबसे महत्वपूर्ण है प्रतिकूल समय में धैर्य को बनाए रखना। धैर्य से ही कठिन से कठिन चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। जिसके पास धैर्य नहीं, वह छोटी से छोटी समस्याओं का सामना भी सही तरीके से नहीं कर पाता है।

2. व्यवसाय लाभ यंत्र

सोमवार के दिन प्रातः सूर्योदय के पश्चात् उपरोक्त चित्र में दिये गये यंत्र का पूजन अष्टगन्ध से सम्पन्न करें। सर्वप्रथम गुरु पूजन, कुलदेवता, इष्ट पूजन के पश्चात् पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से निम्न यंत्र अंकित करें। यंत्र में अपनी दुकान अथवा व्यापार का नाम लिखें, यदि स्वयं के नाम से व्यापार कार्य हो, तो अपना स्वयं का नाम लिखें। अंकित यंत्र तथा साथ ही **धारण योग्य व्यवसाय लाभ यंत्र** स्थापित कर, पुष्प अर्पित करें तथा निम्न मंत्र की सात माला प्रतिदिन जप करें।

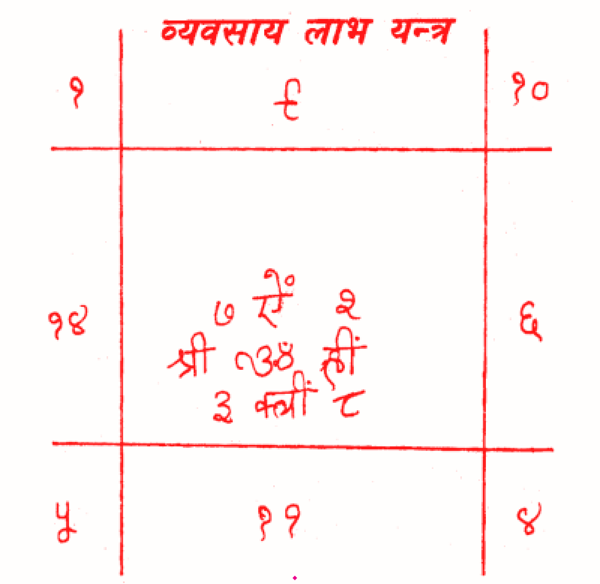

मंत्र

॥ ऐं श्रीं ॐ ह्रीं क्लीं ॥

तीन दिन मंत्र जप के पश्चात ताबीजरुपी यंत्र को गले में लाल रंग के धागे में पिरोकर धारण कर लें। सवा माह पश्चात् समस्त साधना सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

3. शत्रु विद्वेषण यंत्र

शनिवार की सायंकाल के पश्चात् इस प्रयोग को सम्पन्न करें। सर्वप्रथम साधक निम्न शत्रु विद्वेषण यंत्र का अंकन अष्टगंध से भोजपत्र अथवा पीले कागज पर करें। निम्न शत्रु विद्वेषण यंत्र में जिस स्थान पर नाम लिखा है, वहां शत्रु का नाम लिखें। यंत्र अंकन के पश्चात् साधक अपने सामने एक बाजोट पर निम्न अंकित यंत्र स्थापित कर दें तथा भात का नैवेद्य अर्पित करें। इसके पश्चात् साधक **'काली हकीक माला'** से सात माला निम्न मंत्र का जप करें।

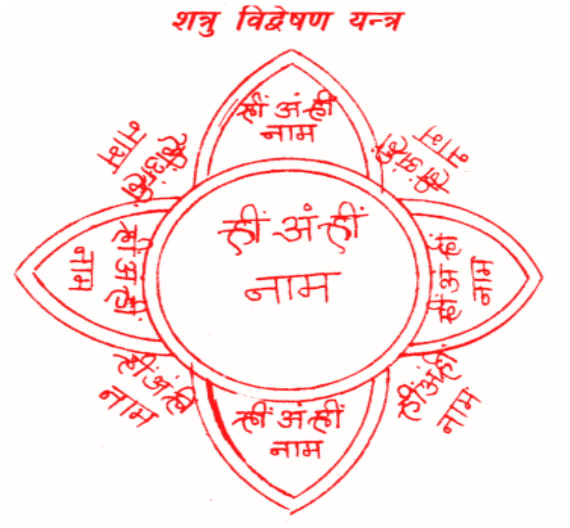

मंत्र

॥ ह्रीं अं ह्रीं ॥

तीन दिन के प्रयोग के पश्चात इस ताबीजरुपी यंत्र पर काला धागा बांध कर जमीन में गाड़ दें। इस यंत्र का पूजन और प्रयोग घर में नहीं करें, शिव मन्दिर में अथवा निर्जन स्थान में ही प्रयोग करना चाहिए।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

ज्ञान और शक्ति जीवन की विभिन्न कठिनाइयों में मदद करने के लिए सदैव साथ में चलती है...

ज्ञान शक्ति देता है और शक्ति ज्ञान प्रदान करती है...

अज्ञानी लोग थोड़ा सा काम शुरु करते हैं किन्तु बहुत ज्यादा व्याकुल होते हैं...

जबकि ज्ञानी अपने ज्ञान के धैर्य के साथ सहजता से कार्य सम्पन्न करता है...

ज्ञान शक्ति प्रदान करने वाला सबसे अच्छा और उपयुक्त साधन है..

4. अनंग यंत्र

गृहस्थ सुख जीवन का सौन्दर्य है, इसकी कमी जीवन में एक अधूरापन देती है। कई पुरुष साथी पुरुषार्थ, शौर्य, बल, सम्मोहन-आकर्षण की कमजोरी से पीड़ा ग्रस्त होते है तो कई स्त्रीयां लावण्य, माधुर्य, चंचलता, सौन्दर्य तथा सम्मोहन और आकर्षण जैसे विशिष्ट गुणों की कमी के कारण गृहस्थ सुख में पूर्ण आनन्द नहीं प्राप्त कर पाती है। उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव स्वरुप स्त्री-पुरुष एक-दूसरे के पूर्ण अनुकूल, वश में होते है और एक-दूसरे को पूर्ण सुख प्रदान करने में सक्षम होते है।

शुक्रवार की मध्य रात्रि को इस यंत्र का अंकन कर इसको स्थापित करें और इसे गन्ध, पुष्प, नैवेद्य इत्यादि अर्पित करें। अंकित यंत्र के निकट ही ताबीज रूपी अनंग यंत्र स्थापित कर दें। साधक श्वेत वस्त्र धारण कर 'ह्रीं' बीज मंत्र का जप करते हुए अपनी शक्तिवर्धन का स्मरण करें। फिर सात दिन तक नित्य अंकित अनंग यंत्र का पूजन कर निम्न बीज मंत्र की एक माला जप करें -

अनंग यंत्र

मंत्र

॥ ॐ ऐं मदने मदन विद्रावणे अनंग संग मे देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा ॥

सात दिन के पश्चात अनंग यंत्र को अपनी भुजा में धारण करें। यह प्रयोग निश्चय ही प्रबल प्रयोग है, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम प्राप्त होता है। 3 माह पश्चात् समस्त साधना सामग्री को किसी पेड़ के नीचे गाड़ दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

5. लक्ष्मी विनायक यंत्र

भगवती लक्ष्मी धन की अधिष्ठात्री है तो भगवान श्रीगणेश विघ्न विनाशक है। जब विघ्नों का नाश होता है तो लक्ष्मी वहां स्थापित हो जाती है। लक्ष्मी-गणेश की पूजा से साधक के जीवन के असंभव और अधूरे कार्य भी पूर्ण हो जाते है। फिर उसे जीवन में आगे बढ़ने से कौन रोक सकता है? बुधवार को प्रातः स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर, अपने पूजा स्थान में एक घी का दीपक जलाएं, सामने पीला वस्त्र बिछाकर उस पर पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से अंकित निम्न यंत्र तथा ताबीज रूपी लक्ष्मी विनायक यंत्र को स्थापित करें। अब एक सुपारी पर मौली लपेट कर चावल की ढेरी पर स्थापित करें, तथा कुंकुम, केशर, अबीर - गुलाल, अष्टगन्ध, पुष्प, नैवेद्य से पहले गणपति का, फिर लक्ष्मी का पूजन करें। इस पूजन के पश्चात तीन माला निम्न मंत्र का जप करें -

लक्ष्मी विनायक यन्त्र

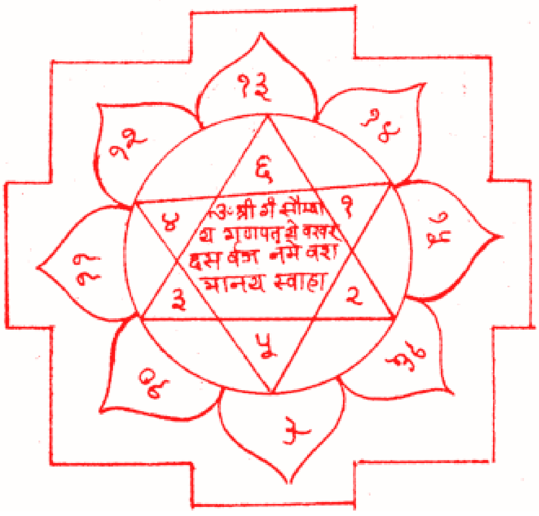

मंत्र

॥ ॐ श्रीं ग्लौं नमः ॥

मंत्र जप पूरा होने के पश्चात इस लिखित यंत्र को पूजा में ही रहने दें और ताबीज रूपी यंत्र को अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर लें, इसके पश्चात गणेश आरती तथा लक्ष्मी आरती सम्पन्न करें। विशेष ध्यान रखें कि मृतक कार्यो में जाते समय इसे धारण न करें, तथा उतार कर अपने पूजा स्थान में रख दें, नित्य पूजन के क्रम में यंत्र को अपने सामने रखकर एक माला मंत्र जप अवश्य करें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 750/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

6. महामृत्युंजय कवच यंत्र

व्याधि, पीड़ा जीवन का अभिशाप है, बीमारी व्यक्ति के जीवन को घुन की तरह खोखला कर देती है, शरीर तो निर्बल होता ही है, मन और इच्छा शक्ति भी निर्बल हो जाते हैं और एक अज्ञात मृत्यु भय हर समय बना रहता है, इसीलिए महामृत्युंजय अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है। इसके पूजन में, जप में, वह शक्ति है, जो पीड़ा से प्रसन्नता की ओर, बीमारी से स्वस्थता की ओर तथा भय से निर्भयता की ओर ले जाती है।

किसी भी सोमवार को किये जाने वाले इस प्रयोग में प्रातः पहले स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात पीले कागज अथवा भोजपत्र पर अष्टगंध से अंकित महामृत्युंजय यंत्र को अपने सामने रख कर एक ओर धूप, अगरबत्ती जलाएं, दूसरी ओर घर में रखे किसी भी **'शिवलिंग'** को यंत्र पर रख कर चन्दन से पूजा करें, इसके सामने एक जल से भरा पात्र रखें, पूरे पूजन के दौरान **'ॐ नमः शिवाय'** मंत्र जप करते रहें साथ ही **ताबीज रूपी धारण योग्य महामृत्युंजय यंत्र** रख दें तथा इस यंत्र के चारों कोनों तथा मध्य में भी चन्दन लगाएं, इसके पहले पूजा के प्रारम्भ में ही अपना नाम, पिता का नाम तथा गोत्र (जाति) लिखें।

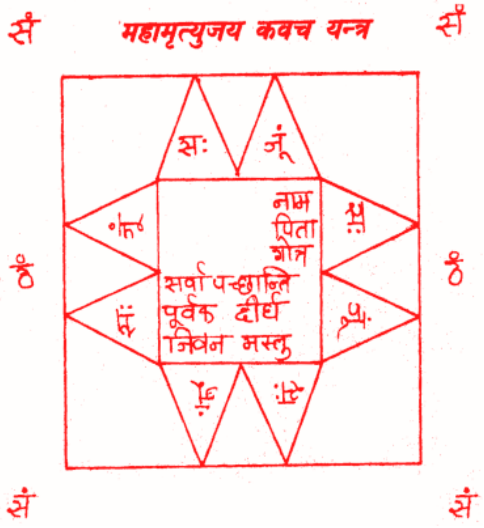

अब महामृत्युंजय की प्रार्थना करें -

प्रार्थना मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मुत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

इसके पश्चात महामृत्युंजय मंत्र की ग्यारह माला का जप करें, अब सामने रखे जल को दाहिने हाथ से खुद के शरीर पर छिड़कें, और शेष जल पी लें।

मंत्र

॥ॐ हौं जूं सः॥

यदि किसी अन्य व्यक्ति के नाम से प्रयोग सम्पन्न करना है, तो पहले दाहिने हाथ में जल ले कर यह संकल्प करें, कि मैं गुरु तथा शिव को साक्षी रखते हुए यह पूजन कार्य अमुक (व्यक्ति का नाम, उसके पिता का नाम, गोत्र) हेतु सम्पन्न कर रहा हूं, पूजन के पश्चात ताबीज धारण करा दें। शिव कृपा का यह अनूठा प्रयोग बडी से बड़ी व्याधि में भी शान्ति प्रदान करता है। यह प्रयोग अत्यन्त सरल एवं शीघ्र प्रभाव देने वाला है, जिससे समस्या के सम्बन्ध में तत्काल राहत प्राप्त हो जाय, दिये गये दिनों में निरन्तर पूजन सम्पन्न करने से पूर्ण अनुकूलता प्राप्त होती है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 2100/-

✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧ ✧

विशेष : साधकों को इन छः यंत्रों की साधना एवं मंत्र जप करते समय निर्देशानुसार कागज, भोजपत्र अथवा वस्त्र पर कुंकुम या केसर अथवा अष्टगन्ध से स्वयं यंत्र का अंकन करना है और उसके साथ ही ये ही यंत्र जो ताबीज रुप में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त हैं, उन्हें धारण करना है।